International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 250-255

एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि

सतीश चन्द मीना*
डॉ. सुनील कुमार**

सार

किसी भी समाज के विकास का मूल आधार शिक्षा होती है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास असम्भव है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि शिक्षा के अभाव में मनुश्य भी संसार के अन्य प्राणियों के समान हो जाता है। मनुश्य के शैक्षणिक विकास में उसकी बुद्धि, सामाजिकता एवं मानसिक प्रक्रियाओं का विकास सम्मिलित है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है किन्तु हमें यह अर्थ नहीं लगा लेना चाहिए कि व्यक्ति जन्म से ही सामाजिक गुणों से परिपूर्ण होता है। वास्तविकता तो यह है कि जन्म के समय बालक न तो सामाजिक होता है और न ही असामाजिक बल्कि वह समाज से अनभिज्ञ होता है। समाज में सामाजिक मूल्यों एवं सामाजिक स्थिति के अनुसार व्यवहार या प्रतिक्रिया करना ही सामाजिक परिपक्वता है। सामाजिक परिपक्वता तथा सांवैगिक परिपक्वता का बढ़ा हुआ स्तर जहाँ बालक के व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है वहीं बालक का शैक्षिक विकास भी करता है। इस शोध कार्य से प्राप्त परिणामों के माध्यम से किशोरों में सामाजिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने हेतु प्रयोग किया जा सकेगा।

शब्दकोषः *सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक परिपक्वता, शैक्षणिक विकास, मानसिक प्रक्रियाओं।*

प्रस्तावना

किसी भी समाज के विकास का मूल आधार शिक्षा होती है। शिक्षा के बिना व्यक्ति का सर्वांगीण विकास असम्भव है। मनुश्य को उन्नत प्रकार से विकसित करने वाले कारकों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है मानव समाज में सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार एवं संरक्षण के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि शिक्षा के अभाव में मनुश्य भी संसार के अन्य प्राणियों के समान हो जाता है। मनुश्य के शैक्षणिक विकास में उसकी बुद्धि, सामाजिकता एवं मानसिक प्रक्रियाओं का विकास सम्मिलित है।

संसार के सभी समाजों में सामाजिक, सांवैगिक, राजनैतिक, धार्मिक या प्रजातीय आधार पर स्तरीकरण की व्यवस्था पायी जाती है। सभी समाजों में शिक्षा समाजीकरण का एक महत्वपूर्ण अभिकरण है। व्यक्ति मे सामाजिक परिपक्वता विकसित करने में एवं संवेगों को नियंत्रित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण, विचार और व्यवहार प्रतिमान को प्रभावित करती है साथ ही शिक्षा को सामाजिक व्यवस्था भी प्रभावित करती है।

सामाजिक परिपक्वता

सामाजिक परिपक्वता का सम्बन्ध सामाजिक क्षमताओं जैसे आत्म पर्याप्ति व्यवसायिक क्रियाओं, अभिव्यक्ति, आत्म निर्देशन और सामाजिक कार्यो में हिस्सेदारी से है। जन्म के समय नवजात न सामाजिक होता

* शोध छात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** निर्देशक, शिक्षा विभाग, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

है न असामाजिक बल्कि वह समाज के प्रति उदासीन रहता है। आयु बढ़ने के साथ–साथ वह सामाजिक गुणों से सुशोभित होता जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद वह सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है। मनुष्य जिस समय व परिस्थिति में रहता है उसमें उसे समायोजन करना होता है। इसलिए आज शारीरिक तथा बौद्धिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास को भी उतना ही महत्वपूर्ण समझा जाता है विशेष कर किशोरावस्था में समस्त संवेगात्मक दशाओं का सामाजिक महत्व होता है। आयु बढ़ने के साथ बालक की सामाजिक संतुलन की मात्रा बढ़ने लगती है और उनमें पर्याप्त मात्रा में सामाजिक परिपक्वता आ जाती है। सामाजिक परिपक्वता के कारण वह बिना पक्षपात के सभी के साथ अच्छा समायोजन बनाने में सफल होता है। बालक सर्वप्रथम परिवार में संबंध बनाना सीखता है, वह अपने माता–पिता से और सगे सम्बन्धियों से तदुपरान्त अन्य लोगों से बाद में अपने साथियों के साथ संबंध स्थापित करना सीखता है। बालक के सामान्य विकास के लिए सामाजिक सम्पर्क आवश्यक है। **रैबर (1995)** "सामाजिक परिपक्वता समाजीकरण की प्रक्रिया का एक अखंड भाग है जिसके द्वारा व्यक्तिगत ज्ञान, मूल्यों, भाषा की सुविधा, सामाजिक कौशल और सामाजिक संवेदनशीलता की प्राप्ति होती है। जो उसे समाज के साथ एकीकृत करने तथा स्वीकार्य व्यवहार करने योग्य बनती है"

सांवैगिक परिपक्वता

संवेग किसी प्राणी की गतिमय और हलचलपूर्ण अवस्था है। मेकडूगल ने मूल प्रवृत्तियों को जन्मजात प्रवृत्तियां मानते हुए उन्हे सभी प्रकार के संवेगों को जन्म देने वाला कहा है। प्रेम, खुशी,स्नेह, प्यार, आश्चर्य, मित्रता जैसे सकारात्मक संवेग व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से वांछनीय क्रियायें करने के लिए प्रेरित करते है जबकि क्रोध, भय, घृणा, कामवासना जैसे नकारात्मक संवेग व्यक्ति को सामाजिक दृष्टि से अवांछनीय प्रतिक्रियायें करने की ओर अग्रसर करते हैं।

उस व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व कहा जा सकता है जो अपने संवेगों पर उचित अंकुश रखते हुए उन्हे भली–भाँति अभिव्यक्त कर सके।

शैक्षिक उपलब्धि

मानव की विभिन्न शक्तियाँ शिक्षा तथा ज्ञान के द्वारा विकसित की जाती है तथा सामाजिक प्राणी के रूप में उसे जीने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करती है। शिक्षा विभिन्न परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने में उनका योगदान देती है। तथा विवेक सम्मत व्यवहार हेतु जागृत करती है। शैक्षिक उपलब्धि एक मनोवैज्ञानिक संरचना है जो किसी व्यक्ति द्वारा निर्देशों एवं अनुभवों के प्रशिक्षण के सहारे अर्जित की जाती है। गुडे, (1946) के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि शालेय विषयों से उत्पन्न ज्ञान की क्षमता परीक्षांक अथवा अध्यापक द्वारा प्रदत्त अंकों से निरूपित की जाती है।"

प्रस्तुत शोध अनुसूचित जनजातियों के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन है। वर्तमान समय में देखने को मिलता है कि जिंदगी में तरह तरह की घटनाएँ घटती रहती है। कुछ सुखदहोती है और कुछ दुःखद होती है। पूर्व शैक्षिक अध्ययनों, अनुसंधानों में यह पाया गया है कि जिन बालकों में सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक समायोजन अधिक होता है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है। अतः छात्रों का सामाजिक एवं सांवैगिक रूप से परिपक्व होना आवश्यक है। आज के बदलते समाज में बहुत से युवा छात्र–छात्राएं विभिन्न प्रकार की असफलताओं के कारण अपना मानसिक संतुलन खो रहे हैं। वे निराशवादी दृष्टिकोण के कारण कुण्ठा का शिकार होकर गलत रास्तों पर चल पड़ते हैं। इसी कारण समाज में वे अपनी विश्वासनीयता खो रहे हैं। अतः प्रस्तुत शोधकार्य एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रकाश डालना है।

समस्या कथन

"एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, सांवैगिक परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि।"

अध्ययन उद्देश्य

- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सांवैगिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सांवैगिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में सोद्देश्य न्यादर्श के आधार पर एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के 600 शिक्षार्थियों का चयन किया गया है।

एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी 600							
सरकारी विद्यालय के शिक्षार्थी 300				गैर सरकारी विद्यालय के शिक्षार्थी 300			
एस.टी वर्ग के शिक्षार्थी 150		सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी 150		एस.टी. वर्ग के शिक्षार्थी 150		सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी 150	
छात्र 75	छात्रा 75	छात्र 75	छात्रा 75	छात्र 75	छात्रा 75	छात्र 75	छात्रा 75

उपकरण

इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया गया है –

सामाजिक परिपक्वता मापनी – डॉ. आर.पी. श्रीवास्तव।

संवेगात्मक परिपक्वता मापनी – डॉ. वाई. सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव।

शैक्षिक उपलब्धि

शिक्षार्थियों के कक्षा 10 कें परीक्षा प्राप्तांकों के आधार पर।

शोधकार्य का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोधकार्य राजस्थान प्रदेश के दौसा मंडल तक ही सीमित है।
- प्रस्तुत अनुसंधान में एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत शोधकार्य में एस.टी. वर्ग के 300 तथा सामान्य वर्ग के 300 शिक्षार्थियों कों लिया गया हैं।

अध्ययन निष्कर्ष

- एस.टी एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी 1: एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता स्तर को प्रदर्शित करती तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	टी –मान	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
एस.टी. वर्ग के शिक्षार्थी	300	71.07	21.03	6.22	3.43	अस्वीकृत
सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी	300	64.85	23.24			

(डी.एफ 598 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96)

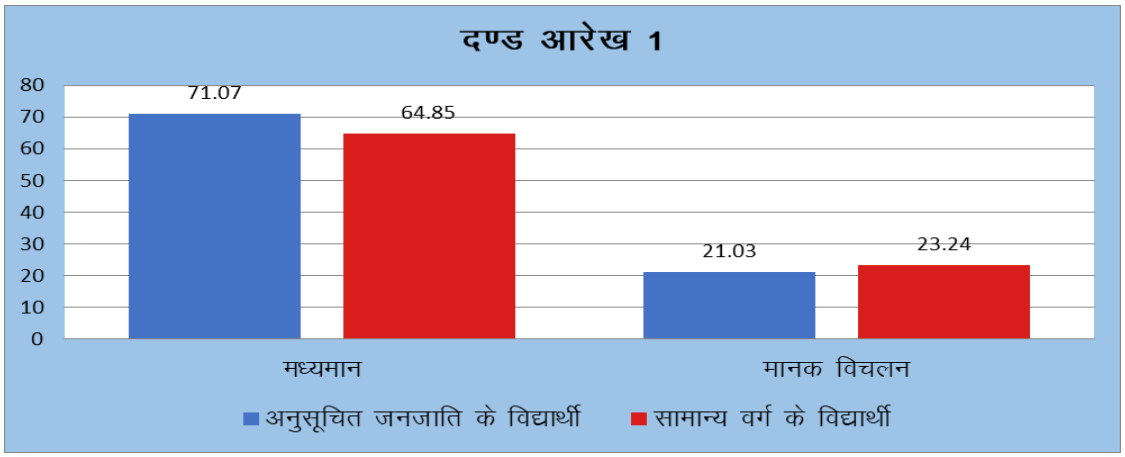

उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ संख्या 1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं **एस.टी.** के शिक्षार्थियों **की सामाजिक परिपक्वता** स्तर का मध्यमान 71.07 तथा मानक विचलन 21.03 और **सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता** स्तर का मध्यमान 64ण्85 तथा मानक विचलन 23.24 हैं। दोनों समूह के मध्यमान का अंतर (6.22) पाया गया हैं। इन प्राप्तांकों से टी का मान 3.43 रहा, जो डी.एफ. 598 के 0.05 स्तर के 1.96 मूल्य से अधिक हैं। अतः सार्थक अन्तर पाया गया ।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि **एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता स्तर** में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की तुलना में एस.टी. के शिक्षार्थियों की सामाजिक परिपक्वता उच्च पायी गयी।

एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

सारणी 2: एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता स्तर को प्रदर्शित करती तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	टी –मान	सार्थकता के 0. 05 स्तर पर
एस.टी. वर्ग के शिक्षार्थी	300	154.56	21.89	6.31	3.75	अस्वीकृत
सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी	300	148.25	19.14			

डी.एफ 598 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96)

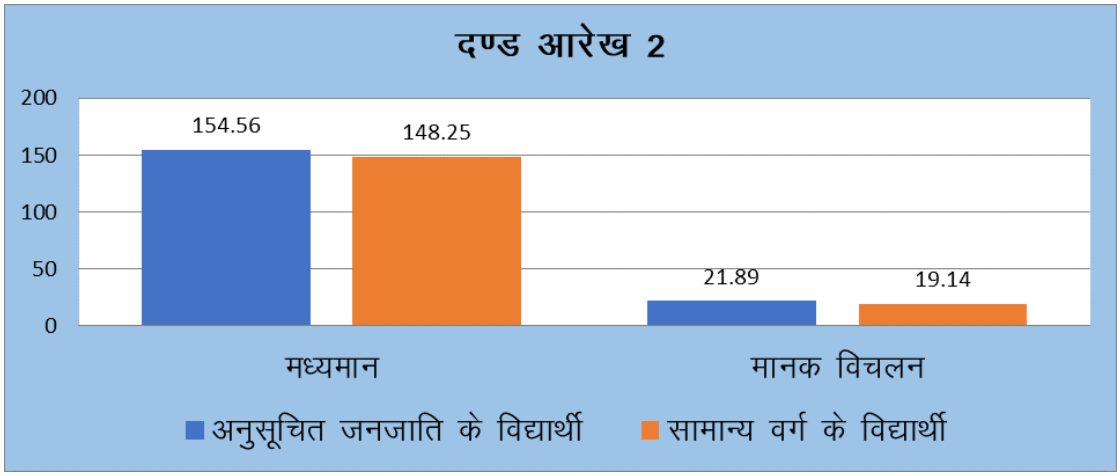

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी और ग्राफ संख्या 2 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि **अनुसूचित जनजाति के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता** स्तर का मध्यमान 154.56 तथा मानक विचलन **21.89** और **सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता** स्तर का मध्यमान 148.25 तथा मानक विचलन 19.14 हैं । दोनों समूह के मध्यमान का अंतर (6.31) पाया गया हैं। इन प्राप्तांकों से टी का मान 3.75 रहा, जो डी.एफ. 598 के 0.05 स्तर के 1.96 मूल्य से अधिक हैं। अतः सार्थक अन्तर पाया गया। **एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सांवैगिक परिपक्वता के** स्तर में सार्थक अन्तर होता है। अतः परिकल्पना अ स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि **एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की सांवैगिक परिपक्वता स्तर** में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की तुलना में एस.टी. के शिक्षार्थियों की सांवैगिक परिपक्वता उच्च पायी गयी।

एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता।

सारणी 3: एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करती तालिका

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	टी –मान	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
एस.टी. वर्ग के शिक्षार्थी	300	70.73	11.35	0.70	0.74	स्वीकृत
सामान्य वर्ग के शिक्षार्थी	300	71.43	11.83			

(डी.एफ 598 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96)

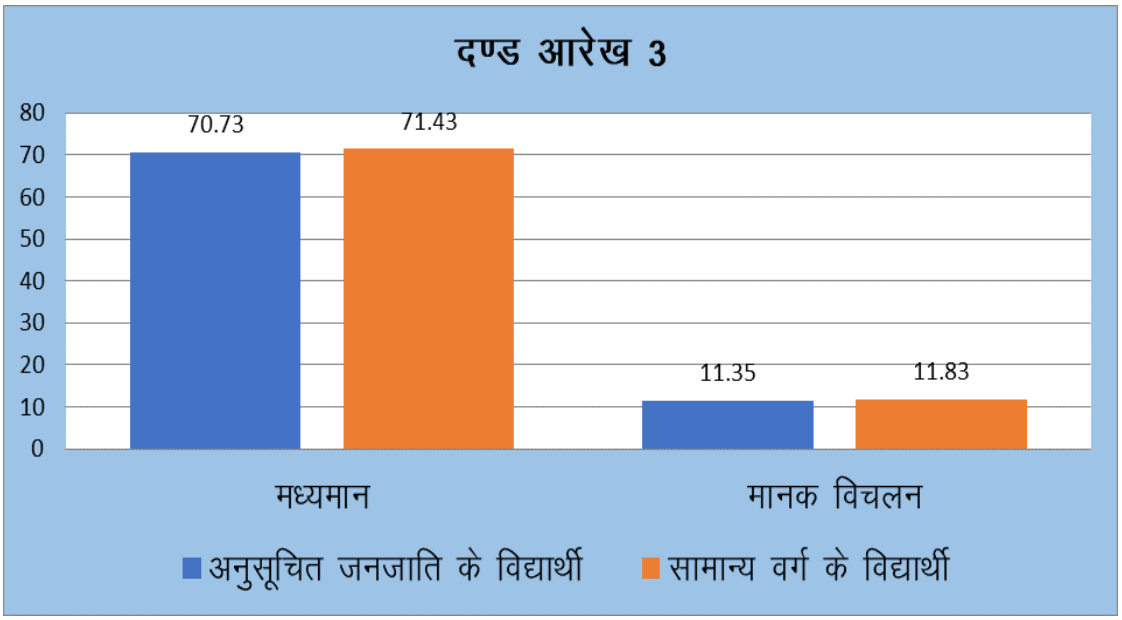

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी और ग्राफ संख्या 3 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि **एस.टी. के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि** का मध्यमान 70.73 तथा मानक विचलन 11.35 और **सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि** का मध्यमान 71.43 तथा मानक विचलन 11.83 हैं। दोनों समूह के मध्यमान का अंतर (0.70) पाया गया हैं। इन प्राप्तांकों से टी का मान 0.74 रहा, जो डी.एफ. 598 के 0.05 स्तर के 1.96 मूल्य से कम हैं। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया हैं।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि एस.टी. एवं सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग के शिक्षार्थियों एवं एस.टी. के शिक्षार्थियों की **शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया जाता** है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अदावल, एस.बी., (1968) :"एज्यूकेशनल रिसर्च", नेशनल काउसिंल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग, नई दिल्ली।
2. अस्थाना विपिन(1995), "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी (2006), 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।
4. चौबे एस.पी., चौबे अखिलेश (2007), शैक्षिक मनोविज्ञान , आर लाल बुक डिपो , मेरठ
5. पाठक, पी.डी, (2007) : "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. पाण्डेय, के.पी., (2006) : "शैक्षिक अनुसंधान", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. शर्मा, आर.ए., (2006) : शिक्षण तकनीकी", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदि, शिखा (2013): ''शिक्षा मनोविज्ञान के दार्शनिक आधार" आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 449–450.
9. शर्मा, डी.एल., (2005) : "शिक्षा तथा भारतीय समाज", सूर्या पब्लिकेशनल, मेरठ।
10. सक्सेना, एन.आर.एस. तथा अन्य, (2006) : "शिक्षा क दार्शनिक व समाजशास्त्रीय सिद्धान्त", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., (2006) : "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
12. नई दिशा (2010) : "राष्ट्रीय शैक्षिक मासिक पत्रिका", नई दिल्ली।
13. बुच, एम.बी., (1983–88): "फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 1, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, .
14. बुच, एम.बी., (1988–92) : "फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन", वोल्यूम – 2, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, .
15. www.shodhganga.com
16. www.educationinindia.net
17. www.scholargoogle.com A

❖◆❖